ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

www.awgp.org

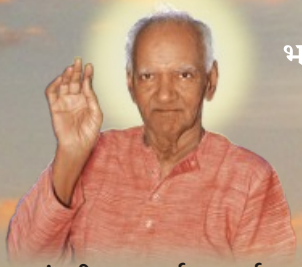

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

माता भगवती देवी शर्मा

कन्याकुमारी

अश्वमेध गायत्री महायज्ञ

(राष्ट्र को समर्थ, सशक्त एवं समृद्धशाली बनाने हेतु महान आध्यात्मिक प्रयोग)

28 से 31 जनवरी 2016

स्थानः विवेकानंद केन्द्र, कन्याकुमारी (तमिलनाडु)

आयोजकः अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

आप सभी सादर आमंत्रित हैं ।

संपर्क सूत्र : 9446636542, 9258369473, 9388639372, 9387620863 • agmk@awgp.in

श्रद्धेया शैलबाला पण्ड्या

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

यज्ञ का ज्ञान - विज्ञान

यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है दान। यज्ञ का अर्थ है सत्कर्म। यह महान उद्देश्यों के लिए निःस्वार्थ समर्पण का प्रतीक है। इस असीम ब्रह्माण्ड की समस्त गतिविधियों की उत्पत्ति एक भव्य अनन्त यज्ञ से मानी जाती है। प्रकृति के सभी नियम यज्ञ की भावना से ओत-प्रोत हैं। यज्ञ का भाव पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है।

यज्ञ समाज को संगति एवं सद्भाव के साथ रहना सिखाती है। यह समाज को उच्च मानवीय आदर्शों हेतु आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। यज्ञ करने का मूल उद्देश्य परमार्थ, आत्मसंयम, दान, संवेदना आदि मूल्यों को दैनिक जीवन में आत्मसात् करना है। अहंकार को परे हटाकर शरीर, मन एवं आत्मा को ईश्वरीय प्रयोजनों हेतु समर्पित कर देने का नाम ही यज्ञ है। शास्त्र भगवान् को यज्ञ-पुरुष की तरह भी पारिभाषित करते हैं। जिस प्रकार समिधा अग्नि में विलय होकर अग्नि ही बन जाती है, वैसे ही यज्ञ करने वाले साधक का जीवन भी यज्ञमय हो जाता है।

यज्ञ से लाभ

- यज्ञ प्रकृति के अनियमित चक्रों को नियमित करने में सहायक सिद्ध होती है।
- यज्ञ कई शारीरिक बीमारियों का इलाज कर सकने में प्रभावी है। इसे यज्ञोपैथी अथवा होम-चिकित्सा कहा जाता है।
- वैज्ञानिक ढंग से किये गए यज्ञ प्रदूषण को नियंत्रित करने एवं वातावरण को शुद्ध करने में मदद करते हैं।
- यज्ञ से एक सात्विक वातावरण तैयार होता है, जो लोगों के आध्यात्मिक विकास में बहुत सहायक होता है।

क्या है गायत्री अश्वमेध महायज्ञ ?

अश्व गतिशीलता, वीरता और शक्ति का प्रतीक है। मेधा उत्कृष्ट ज्ञान और बुद्धि को कहा जाता है । अतः 'अश्वमेध' साहस एवं बुद्धि का संयोजन है। गायत्री अश्वमेध पूरे देश-समाज के सुख, शान्ति एवं समृद्धि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया जाने वाला एक विशेष आध्यात्मिक प्रयोग है। यह यज्ञ देश के वातावरण को सूक्ष्म रूप से शुद्ध करने में मदद करता है। सामूहिक रूप से जन-जागरण कर सुप्त प्रतिभा को जगाने, एवं उसे सभ्यता-संस्कृति के उत्थान हेतु नियोजित करने के लिए अश्वमेध एक सशक्त माध्यम है ।

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ के विशेष आकर्षण :

- 251 कुण्डीय भव्य यज्ञशाला एवं देव-संस्कृति को दर्शाती एक विशेष प्रदर्शनी
- शांतिकुंज, हरिद्वार के विशेष पुरोहितों द्वारा वैदिक मन्त्रों के साथ 3 दिनों तक हवन-संस्कार आदि
- महान आध्यात्मिक संतों के प्रवचन एवं सत्संग, देश भर से लोगों का समागम।
- यज्ञ सभी के लिए पूर्णतः निःशुल्क, केवल स्वैच्छिक दान ही स्वीकृत।

इस महान आयोजन का हिस्सा बनें, अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें -

- समूचा विश्व महान परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है। इस परिवर्तन को सही स्वरूप देने में इस यज्ञ की बड़ी भूमिका होनी है। आप भी इस आयोजन में सक्रिय रूप से हिस्सा लें। भाग्यशाली बनें। यह महान अवसर ना चूकें।
- स्वयंसेवक बनें। अपना कुछ समय निकालकर अश्वमेध से जुड़े गतिविधियों में अवश्य लगाएँ।
- अपने मित्रों, रिश्तेदारों, जान-पहचान के लोगों को इस होने वाले यज्ञ से अवगत कराएँ। उन्हें व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण देकर उनकी भागीदारी इस यज्ञ में सुनिश्चित करें।
- समिधा, हवन सामग्री, घी, खाद्य सामग्री, निर्माण तथा अन्य आयोजन हेतु होने वाले खर्च के लिए अंशदान जरूर निकालें।

इस महायज्ञ में आप सादर आमंत्रित हैं। जाति-धर्म-लिंग आदि का कोई बंधन नहीं।

संक्षिप्त कार्यक्रम :

- **28 जनवरी 2016** : प्रातः विशेष ध्यान, 5100 कलशों एवं झांकियों के साथ भव्य कलश यात्रा से शुभारंभ
- **29 जनवरी 2016** : प्रातः विशेष ध्यान, देव पूजन, एवं महायज्ञ
सायंः सत्संग एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम
- **30 जनवरी 2016** : प्रातः विशेष ध्यान, यज्ञ एवं षोडश संस्कार
सायंः 51000 दीपकों के साथ भव्य दीप महायज्ञ
- **31 जनवरी 2016** : प्रातः विशेष ध्यान, महापूर्णाहुति

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

(गायत्री परिवार के संस्थापक-संरक्षक जिनका आध्यात्मिक पुरुषार्थ ही इस अश्वमेध की शक्ति है)

- गायत्री के प्रसिद्ध सिद्ध साधक
- 24 वर्षों तक गायत्री मंत्र की कठोर साधना। 24-24 लाख के 24 महापुरश्चरण
- गायत्री एवं यज्ञ महाविद्या की पुनर्स्थापना
- 4000 से अधिक गायत्री शक्तिपीठों की संस्थापना एवं संरक्षण
- ऋषि परंपरा को पुनर्जीवित करने वाले मनीषी। महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
- नए युग की संस्थापना के लिए 'युग निर्माण योजना' के प्रवर्तक
- 3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक। वेद, पुराण और उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार
- वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के प्रतिपादक, विश्व के करोड़ों लोगों के आध्यात्मिक मार्गदर्शक
- सांस्कृतिक पुनरुत्थान को समर्पित 'देव संस्कृति विश्वविद्यालय' के संरक्षक

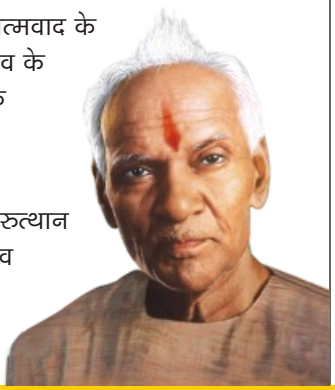

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

गंगा की गोद, हिमालय की छाया में विनिर्मित गायत्रीतीर्थ- शांतिकुंज, हरिद्वार लाखों-करोड़ों गायत्री साधकों का गुरुद्धारा है। युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा की प्रचंड तप साधना की ऊर्जा से अनुप्राणित यह जागृत तीर्थ शरीर, मन एवं अंतःकरण को स्वस्थ, समुन्नत बनाने के लिए अनुकूल वातावरण, मार्गदर्शन एवं शक्ति देता है। सन 1926से प्रज्ज्वलित अखण्ड दीप यहाँ स्थापित है, एवं इसके सान्निध्य में 2400 करोड़ से अधिक गायत्री जप संपन्न हो चुके हैं। दैनिक गायत्री जप-यज्ञ -सत्संग के अतिरिक्त यहाँ निःशुल्क नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र, एक मासीय युग-शिल्पी सत्र आदि वर्ष भर चलते रहते हैं।

SPONSOR SPACE